प्रबुद्ध वर्ग

धर्मतन्त्र को सँभाले

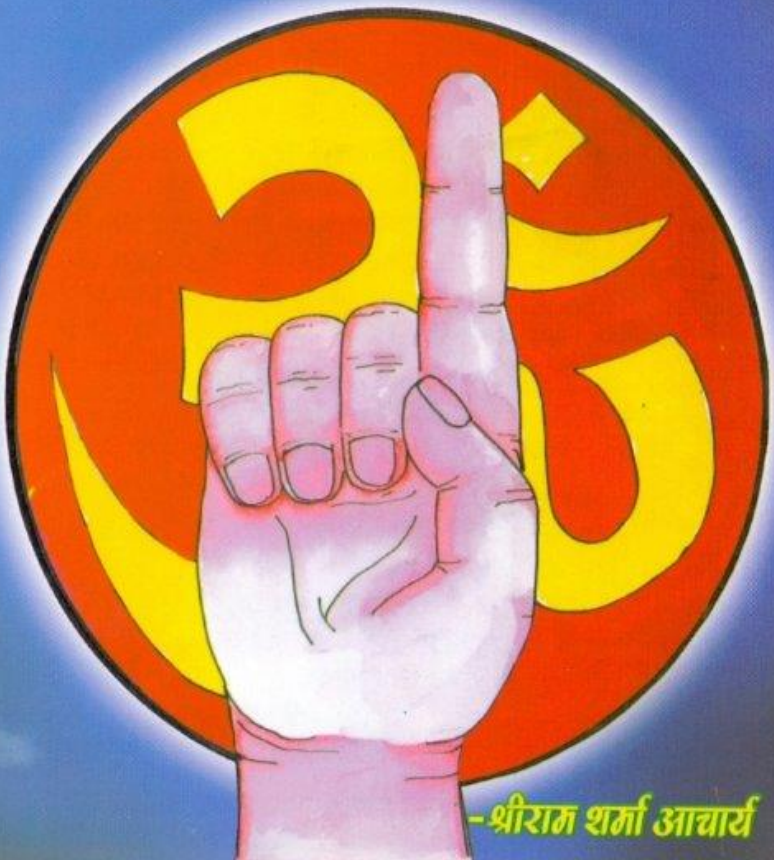

-श्रीराम शर्मा आचार्य

प्रबुद्ध वर्ग धर्मतन्त्र को सँभाले

वैयक्तिक एवं सामाजिक प्रगति की सारी सम्भावना इस बात पर टिकी हुई है कि उनकी विचारणा एवं कार्य–पद्धति सही हो । किसी दीन–दुःखी की तात्कालिक सहायता तो कुछ सामयिक सहारा देकर की जा सकती है, पर किसी की कोई भी समस्या दूसरों के सहयोग से स्थाई रूप से हल नहीं हो सकती । रोगी का रोग दवा से नहीं संयम से दूर हो सकता है । डाक्टर कितनी ही अच्छी औषधि दे, पथ्य–परहेज न रखने वाले मरीज की बीमारी लौट–लौटकर फिर आती रहेगी । अन्न–वस्त्र देकर गरीबी का कोई हल नहीं हो सकता है । किसी को भोजन देकर उसकी तात्कालिक क्षुधा मिटाई जा सकती है, पर ऐसे भूखे–नंगे को सदा कौन भोजन देगा ? उनकी गरीबी तो तभी दूर होगी, जब वे उद्योग और परिश्रम द्वारा कुछ कमाने लग जाऐं । यही बात अन्य सभी समस्याओं के सम्बन्ध में भी है । मनोविकार ही समस्त आपत्तियों और अभावों की जड़ हैं, उनका समाधान करना है तो लोगों की विचार पद्धति को ही सुधारना होगा । किसी के विचार सुधार देने, उसकी विचारणा सही कर देने से बढ़कर और कोई पुण्य परोपकार हो नहीं सकता । इससे बड़ा कर्म और कोई नहीं । ज्ञान–दान से, ब्रह्म–दान से बढ़कर और कोई बड़ा पुण्य इस धरती पर है नहीं, इसे जो ब्राह्मण आजीवन करते रहने का व्रत लेते थे, वे धरती के देवता भूसुर माने जाते थे । आज इस वर्ग का अभाव हो गया है इस अभाव की पूर्ति के लिए प्रत्येक प्रबुद्ध व्यक्ति को अपने आपको समर्पित करना चाहिए । आज ऐसे ही भावनाशील व्यक्तियों की आवश्यकता है, जो ब्रह्म कर्म में–जन जागरण में संलग्न होकर अपना समस्त विश्व का कल्याण कर सकने में समर्थ हो सकें ।

अनेक आपत्तियाँ एक कारण–इन दिनों हर एक आपत्तियों और उलझनों में ग्रसित है । व्यक्तिगत जीवन में हर मनुष्य बीमारियों में, चिन्ताओं में, आर्थिक तंगी में, शत्रुता में घिरा पड़ा है । पारिवारिक जीवन में अविश्वास, सन्देह, आशंका, उच्छृंखलता, दुराव, अवज्ञा, कृतघ्नता और असहयोग का दौर–दौरा पूरे वेग पर है । सामाजिक जीवन में भ्रष्टाचार, चोर–बाजारी, रिश्वतखोरी, ठगी, बेईमानी, गुण्डागर्दी,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विलासिता, नशेबाजी, कामुकता, स्वार्थपरता जैसी दुष्प्रवृत्तियाँ जोरों से बढ़ रही हैं । राजनीति में गुटबन्दी, आपाधापी, भाई–भतीजावाद बढ़ रहा है और भाषा, प्रान्त आदि के बहाने गृह–युद्ध जैसा छिड़ा हुआ है । धार्मिक क्षेत्र में त्याग–तप, बलिदान, संयम, सदाचार का तो पता भी नहीं चलता, सिद्धि चमत्कार तथा ढोंग–पाखण्डों का पर्वत बना खड़ा है । महन्त और मठाधीशों की, पण्डा और पुरोहितों की पाँचों घी में हैं । जो जन–कल्याण के लिए अपना पसीना बहाए, ऐसा धर्मात्मा कहीं ढूँढ़े नहीं दीखता । अन्तर्राष्ट्रीय जगत में एक देश दूसरों के शोषण, दमन के लिए कूटनीतिक षड्यन्त्र रचने और जाल बिछाने में लगा हुआ है । हर क्षेत्र में जबकि दुर्बुद्धि का साम्राज्य छाया हुआ हो, अन्याय, अपराध, आलस्य, असंयम, आवेश जैसे दोष–दुर्गुण बढ़ रहे हों, तब संसार में अशान्ति और विग्रह के बढ़ने की ही आशा की जा सकती है । प्रत्येक क्षेत्र में जड़ जमाये बैठी हुई और दिन–दिन बढ़ रही दुष्प्रवृत्तियाँ संसार को नरक बनाये हुए हैं । यदि यही स्थिति बनी रही तो वह दिन दूर नहीं जब हम अणु–आयुधों द्वारा सामूहिक आत्महत्या करें और चिर संचित मानव सभ्यता को समाप्त कर दें । ऐसी विषम परिस्थितियों के युग में जन्मे प्रत्येक विचारशील व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह इस विभिषिका का हल करने के लिए यदि कुछ कर सकता हो तो उसे जरूर कर दे ।

भौतिक प्रगति पर्याप्त नहीं–निस्सदेह भौतिक प्रगति की दृष्टि से यह अभूतपूर्व युग है, पर दुर्भाग्य इसी बात का है कि इसने वैयक्तिक एवं सामाजिक सुख–शान्ति को बढ़ाया नहीं घटाया है । बाह्य जीवन के साथ–साथ आन्तरिक जीवन के विकसित न होने का यही परिणाम है । जीवन दो पहिए की गाड़ी है । एक को भौतिक और दूसरे को आध्यात्मिक कहते हैं । प्रचुर पदार्थों से ही सुख नहीं मिलता, उत्कृष्ट भावनाओं की भी आवश्यकता पड़ती है । इन दिनों यही भूल हुई है । सारा ध्यान भौतिक प्रगति पर दिया गया और उत्पन्न सुविधाओं का उपयोग शारीरिक, सांसारिक सुख बढ़ाने में किया गया । फलस्वरूप लोभ बढ़ा, विलास बढ़ा, अहंकार बढ़ा, प्रवञ्चना बढ़ी और साथ ही संकीर्णता भी सुरसा की तरह विस्तृत हो गई ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कमजोर, गधा, हाथी की अम्बारी का भार वहन नहीं कर सकता। भौतिक सुविधाओं का शरीर सुख के लिए उपयोग किया जाता रहे तो कुछ ही समय में शरीर टूट जायगा। इसी प्रकार शिक्षा एवं विचारणा का लाभ यदि अपने अहं का पोषण करने में ही लगा दिया जाय तो मनःस्तर भी चकनाचूर हो जायगा। विज्ञान ने हमें भौतिक प्रगति दी, पर ज्ञान पिछड़ गया। यदि सुख-साधनों के साथ-साथ मनुष्य का भावना स्तर भी ऊपर उठा होता तो आज चारों ओर जो नारकीय क्लेश, कलह, द्वेष-दुर्भाव रोग-शोक दिखाई पड़ रहे हैं, न उपजे होते। उपलब्ध साधनों का यदि स्वस्थ रीति से, स्वस्थ प्रगति के लिए उपयोग हुआ होता तो हम इस धरती पर स्वर्ग का अवतरण कर सकने में समर्थ हो गये होते।

दिशा बदले तो युग बदले-जितना धन, जितना श्रम, जितने साधन, जितनी बुद्धि अवांछनीय कार्यों, विचारों एवं परिस्थितियों के सृजन में आज लगी हुई है, उसकी दिशा बदल जाय और उसका उपयोग सृजनात्मक दिशा में हो जाय तो संसार का कायाकल्प ही हुआ दिखाई देगा। संसार में लगभग ४० करोड़ लोग सैन्य प्रयोजनों में लगे हुए हैं। लड़ने वाले सैनिक अस्त्र-शस्त्र तथा सैन्य सामग्री बनाने वाली, यह इतनी बड़ी जनसंख्या और उस पर हर वर्ष खर्च होने वाली धनराशि यदि गरीबी, बेकारी, अशिक्षा, बीमारी, गन्दगी एवं अव्यवस्था दूर करने में लग जाय तो उसका परिणाम चमत्कार जैसा हो सकता है।

सिनेमा, नाटक, अभिनय, नृत्य साहित्य व रेडियो आदि विचार निर्माण साधनों का उपयोग यदि कामुकता जैसी दुष्प्रवृत्तियाँ बढ़ाने में न लगे, वरन् सदाचार कर्तव्य पालन, आदर्शवाद, परस्पर स्नेह, सहयोग करने जैसी धर्म भावनाओं के प्रसारण में लग जाय तो जन-भावना में कुछ ही वर्षों के भीतर देवत्व परिलक्षित होने लगेगा। जितना पैसा तम्बाकू, शराब जैसे अभक्ष्य में खर्च किया जाता है, यदि वह खाद उत्पादन में लग जाय तो संसार में भुखमरी का नाम भी सुनने को न मिले।

अपराधों में लगे हुए व्यक्ति, चोर-डाकू, ठग, हत्यारे, व्यभिचारी स्त्री-पुरुष यदि अपनी अद्भुत प्रतिभा को लोकमंगल की दिशा में मोड़ दें तो हर दुष्ट पुरुष वाल्मीकि, हर दुराचारिणी अम्बपाली बनकर संसार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में आनन्द एवं उल्लास की परिस्थिति पैदा कर सकते हैं । सारे अखबार, सारे प्रेस यदि विश्व बन्धुत्व, सदाचार एवं आदर्शवाद के अभिवर्धन में अपनी शक्ति लगा दें तो समस्त संसार में रहने वाले अरबों लोगों के मस्तिष्क उत्कृष्ट सोचने और शरीर उत्कृष्ट कार्य करने में लग जाये । शासन तंत्र यदि ईमानदारी से लोक सेवा को ही अपना लक्ष्य बना ले तो इतने नेताओं और कार्यकर्त्ताओं को पाकर जनता का भाग्य जाग पड़े । धर्म–तंत्र का इतना विशाल कलेवर जिसमें भारत जैसे गरीब देश में ही ८० लाख धर्मजीवी व्यक्तियों का निर्वाह होता है, यदि जन भावनाओं के मानवीय कर्तव्यों एवं आदर्शों के प्रशिक्षण में लग जायँ तो सर्वत्र धर्म की ध्वजा फहराती दिखाई पड़े ।

बढ़ी–चढ़ी भूल–भौतिक दृष्टि से आशाजनक प्रगति होते हुए भी, उसका परिणाम निराशाजनक देखकर सहसा यही बात सामने आती है कि कहीं कोई बहुत बड़ी भूल हो रही है और यदि वह भूल न सुधारी तो भौतिक प्रगति के साथ–साथ विपत्तियाँ भी बढ़ती चली जायेंगी । अणु अस्त्रों के बाहुल्य ने आज चिरसंचित मानवीय सभ्यता का जड़–मूल से विनाश करने का खतरा उत्पन्न कर दिया है । अपराधों की अभिवृद्धि तूफानी तेजी के साथ हो रही है । एक दूसरे को सहयोग देने के स्थान पर लोग परस्पर खून के प्यासे बन रहे हैं । 'मुख में राम बगल में छुरी' का जैसा व्यापक छल–प्रपंच बढ़ चला है, उसने आत्मीयता के सारे सम्बन्धों की जड़ें खोखली कर दी हैं, अब परिवार के सदस्य भी एक–दूसरे को आशंका और अविश्वास की दृष्टि से देखने लगे हैं । श्रद्धा और विश्वास, उदारता और आत्मीयता के सह–सम्बन्ध अब एक काल्पनिक तथ्य बनते चले जा रहे हैं । धार्मिकता और आस्तिकता का कलेवर कागज के बने विशालकाय रामलीला के रावण जैसे बने खड़े हैं, पर उनके भीतर भी पोल और खोखलेपन के अतिरिक्त और कुछ नहीं हैं ।

इन विषम परिस्थितियों से मनुष्य जाति का भविष्य दिन–दिन अंधकारमय बनता चला जा रहा है । वैज्ञानिक और आर्थिक प्रगति के द्वारा जो सुख–शान्ति बढ़नी चाहिए थी वह तो दूर उल्टे स्वास्थ्य,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संतुलन और सद्भाव का दिन-दिन अभाव होता चला जा रहा है। यदि स्थिति ऐसी ही बनी रही, इसी ढर्रे पर चलती रही, तो इससे अगले दिनों और भी अधिक भयानक दुर्दिन देखने पड़ सकते हैं।

परिवर्तन सम्भव है-प्रश्न यह है कि क्या यह ढर्रा बदला जा सकता है ? क्या पतनोन्मुख प्रवृत्तियों को रचनात्मक दिशा में मोड़ा जा सकता है ? क्या संभावित अशुभ भविष्य को स्वर्ग विहान में परिणत किया जा सकता है ? क्या नरक की परिणति स्वर्ग में हो सकती है।

उत्तर विश्वासपूर्वक 'हाँ' में दिया जा सकता है, शर्त केवल इतनी भर है कि समाज का प्रबुद्ध वर्ग, समय और परिस्थितियों को बदलने की अपनी जिम्मेदारी समझे और उसके लिए कटिबद्ध हो।

नर-पशु धरती के भार-किसी समाज का प्राण उसका प्रबुद्ध वर्ग होता है, जिनकी विचारणा और भावना आदर्शवाद से प्रभावित है ऐसे लोग निस्सन्देह संख्या में बहुत थोड़े होते हैं, पर जो होते हैं, वे इतने सशक्त रहते हैं कि यदि वे कुछ करने के लिए सचमुच उठ खड़े हों तो चमत्कार उपस्थित कर दें।

जन समूह में ऐसे लोगों का बाहुल्य रहता है जो रोटी कमाने और प्रजनन के फलस्वरूप कन्धों पर आने वाली जिम्मेदारियों को वहन करने में अपनी छोटी-सी सामर्थ्य का सारा ढाँचा खपा देते हैं। एक तो वैसे ही मँहगाई का जमाना और फिर आवश्यकताओं की नित नई बढ़ोत्तरी, इस पर भी स्वल्प योग्यता, स्वल्प साधन, बेचारों का कचूमर इसी में निकल जाता है। बच्चों की संख्या बढ़ती चलती है और वजन रुई से लदे गद्दों के वर्षा में भीगने की तरह बढ़ता चलता है। एक तो इतना भार काफी होता है, दूसरे योग्यता कम रहने से उसे उठाने के साधन नहीं जुटा पाते, तीसरे मन में कोई आदर्शवादी लक्ष्य न होने से उनके लिए देश समाज की बात सोच सकना कठिन होता है। मस्तिष्क की छोटी परिधि घूमती है तो केवल शरीर मात्र, इन्द्रिय तृप्ति या परिवार पोषण के दायरे में चक्कर लगाकर समाप्त हो जाती है। बाहुल्य ऐसे ही लोगों का रहता है। इन्हें जीवित मानव प्राणी मात्र कहा जा सकता है। अन्य प्राणियों के शरीर और मन उसी परिधि में हैं,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इन्हीं प्रयोजनों को पूरा करने में वे भी अपनी जिन्दगी के दिन पूरे करते हैं । उनकी इच्छा–आकांक्षाऐं भी इतने ही दायरे में सीमित रहती हैं ।

वह वर्ग जनसंख्या की गणना तो बढ़ाता है, पर उसका देश व समाज की दृष्टि में कोई उत्साहवर्धक योग नहीं मिलता । सच तो यह है कि यह वर्ग अनेक प्रकार की समस्याऐं बढ़ाता रहा है । गरीबी, बेकारी, कुरीतियाँ, दुष्प्रवृत्तियाँ इसी वर्ग में पैदा होती और पनपती हैं । उसको तो यथास्थान बनाये रहने में भी समाज एवं शासन को बड़ा श्रम करना पड़ता है, ऐसे लोगों से यह आशा नहीं की जा सकती कि वे समय की दिशा बदलने में कोई योगदान कर सकेंगे ।

नर–पिशाचों से क्या आशा ?–जनता का दूसरा वर्ग वह है जो बुद्धि एवं शक्ति की दृष्टि से समर्थ है, पर उसकी आकांक्षाऐं अवांछनीय दिशा में चल पड़ी हैं । अधिक भोगने, अधिक जोड़ने, अधिक दर्प दिखाने की असुरता से उन्हें सुख मिलता है । इसलिए अपनी क्षमता का लाभ तो अपने लिए सुरक्षित रखते ही हैं, दूसरों के अधिकारों पर भी आक्रमण करते हैं और छल–प्रपंच, शोषण, अपहरण की नीति अपनाकर किसी को भी सताकर अपना स्वार्थ सिद्ध करते हैं । इसी वर्ग के कुछ लोग हिम्मत की कमी की बजह से खूँख्वार तो नहीं हो पाते, पर कृपण और निष्ठुर परले सिरे के होते हैं । जो कमाया जाय अपने या अपने बेटे–पोतों के लिए जमा रहे, जो शौक–मौज हो सकते हैं उसे स्वयं उठायें या अपने बेटे–पोतों के लिए उपस्थित करें । समाज नामक कोई तत्व उनके सामने नहीं होता, दुनियाँ कल मरती हो तो आज मर जाय, उन्हें तब तक किसी की कोई चिन्ता नहीं होती जब तक कि कोई सीधा प्रभाव उन पर न पड़ता हो । पत्थर जैसे कठोर हृदय के कृपण और दुष्टता के आदी, क्रूर, कुकर्मी यद्यपि देखने में अलग–अलग किस्म के हैं, पर उनका आन्तरिक स्तर एक ही है । सीमित स्वार्थ ही उनके लिए सब कुछ है, खुदगर्जी ही उनकी उपास्य है । ईश्वर के सामने भी जायेंगे तो वहाँ से भी कुछ मतलब गाँठने की ही तरकीब निकालेंगे । अपनी शक्ति और सामर्थ्य का कोई अंश किसी सत्कर्म के लिए लगा सकने की न तो उन्हें इच्छा होती है और न वैसा साहस ही कर पाते हैं । इस वर्ग

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की संख्या तो बहुत नहीं होती है, पर जितनी भी होती है, हर किसी के लिए समस्या एवं सिर दर्द बनी रहती है ।

उपर्युक्त दो वर्गों में से पहले को नर–पशु और दूसरे को नर–पिशाच कहा जा सकता है । इनके द्वारा समाज का भार बढ़ता और पतन होता है । इसलिए जहाँ तक किसी सुधारात्मक प्रक्रिया का सम्बन्ध है, उनसे कोई आशा नहीं की जा सकती । समस्याऐं तो इन्हीं वर्गों के द्वारा उत्पन्न होती हैं, उलझनें तो वे ही पैदा करते हैं, अवांछनीयता पनपती और बढ़ती इन्हीं वर्गों में से है । पहले वर्ग को यदि थोड़ा अधिक विचारशील बनाया जा सके और दूसरे वर्ग को उद्दण्डता न करने के नियंत्रण में रखा जा सके तो बहुत कुछ हुआ समझना चाहिए ।

संसार की आशा का केन्द्र–तीसरा छोटा वर्ग वह है जिसे प्रबुद्ध कहना चाहिए । जिसकी विचारणा पाशविक आकांक्षाओं और सीमाओं से आगे बढ़कर देश, धर्म, समाज एवं संस्कृति के बड़े दायरे में काम करती है । जिनके मन में अपने समाज, अपने समय की कठिनाइयों को समझने और उनके हल करने के लिए हलचल उठती है उन्हें प्रबुद्ध कहना चाहिए । ऐसे लोग ही ईश्वर, धर्म, पुण्य और परमार्थ की बात सोचते हैं और उन्हीं के मन में देश–धर्म की बातें आती हैं । इन्हें उदारचेता, दूरदर्शी, विवेकशील या विशाल हृदय भी कहते हैं । जीवनयापन की समस्याऐं उनके सामने भी होती हैं, पर वे उन्हें गौण समझते हैं । जितने से शरीर यात्रा का निर्वाह हो जाय, उतने में संतोष कर लेते हैं । जितने कम समय में गुजर का प्रबन्ध हो सके, उतना उसमें लगाकर शेष सब कुछ लोकमंगल के लिए लगाते रहते हैं । भौतिक महत्वाकांक्षाओं का परित्याग कर वे एक सामान्य स्तर का नागरिक बना रहना पर्याप्त समझते हैं । गरीबी उन्हें अखरती नहीं, वरन् सन्तोष देती है कि वे देश के करोड़ों नागरिकों की तरह ही रह रहे हैं । उनकी महत्वाकांक्षा तो अपना उज्ज्वल चरित्र दीपक की तरह प्रकाशमान बनाने की रहती है, जिससे दूसरों को आवश्यक प्रकाश मिल सके ।

यह प्रबुद्ध वर्ग मानव जाति का प्राण है । प्राण सो गया तो शरीर निष्क्रिय हो गया । प्राण रोगी हो गया तो शरीर के रुग्ण होने में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कोई सन्देह नहीं, प्राण निकल गया तो शरीर की मृत्यु निश्चित है । प्रबुद्ध वर्ग जिस समाज का सतेज, समर्थ और सक्रिय है, उसे उन्नति के उच्च शिखर पर पहुँचते देर नहीं लगती । जिस समाज का प्रबुद्ध वर्ग सोचता तो बहुत है, पर करता कुछ नहीं, वहीं निष्क्रियता का मरघट जैसा सन्नाटा छाया रहता है । जहाँ के प्रबुद्ध लोग धर्म का ढोंग बनाकर अपना स्वार्थ सिद्ध करते हैं, वहाँ की जनता मूढ़, दिग्भ्रान्त एवं अनास्थावान बन जाती है । जहाँ प्रबुद्ध लोगों की संख्या नहीं रहती, वहाँ पाप और पतन का भयानक अन्धकार छा जाता है और सार्वजनिक विनाश की काली घटाऐं मँडराने लगती हैं । अतएव सदा से किसी राष्ट्र या समाज की वास्तविक शक्ति एवं सम्पन्नता वहाँ के प्रबुद्ध लोगों से ही आँकी जाती रही है ।

इतिहास के उज्ज्वल नक्षत्र—भारत का प्राचीन इतिहास गौरवपूर्ण रहा है । इस गौरव का एकमात्र आधार यहाँ के महामानव, परोपकारी एवं भक्त धर्म सेवक एवं दूरदर्शी लोग ही रहे हैं । यदि अपने इतिहास में से हम वशिष्ठ, भारद्वाज, अत्रि, याज्ञवल्क्य, जमदग्नि, नारद, विश्वामित्र आदि ऋषियों को, हरिश्चन्द्र, शिवि, कर्ण, दधीचि, मोरध्वज, युधिष्ठिर जैसे धर्मनिष्ठों को, बुद्ध, महावीर, शंकराचार्य, रामकृष्ण, विवेकानन्द, रामदास, नानक, कबीर, गोविन्दसिंह जैसे सन्तों को, गाँधी, दयानन्द, राममोहन राय, ईश्वर चन्द्र जैसे सुधारकों को, गोखले, तिलक, लाजपतराय, मालवीय, दास, सुभाष, नेहरू, पटेल जैसे स्वतंत्रता सेनापतियों को, आजाद, बिस्मिल, भगतसिंह, सावरकर, अरविंद जैसे क्रान्तिकारियों को, लक्ष्मीबाई, अहिल्याबाई, सरोजनी, गान्धारी, सीता, अनुसूया जैसी महिलाओं को निकाल दें, तो फिर भारत का न कुछ इतिहास रहेगा और न गौरव । कोई देश दौलत, शिक्षा, कला—कौशल आदि के आधार पर समृद्ध नहीं होता, समृद्धि का स्रोत तो प्रबुद्ध लोगों के व्यक्तित्व होते हैं । जहाँ वे हैं वहाँ सब कुछ है, जहाँ वे नहीं वहाँ कुछ भी नहीं, यही समझना चाहिए ।

आज की विषम परिस्थितियों का सुधार एवं परिवर्तन तभी सम्भव है, जब प्रबुद्ध वर्ग का जो अभाव दीख रहा है, उसकी पूर्ति हो सके ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यदि किसी के दिल में वस्तुतः देश, धर्म, समाज–संस्कृति की दुर्दशा पर दुख होता हो और यदि वस्तुतः उसकी आकांक्षा इस विषमता को बदल देने की हो तो उसे अपनी सारी शक्ति लगाकर देश में प्रबुद्ध वर्ग उत्पन्न करने, उसे संगठित एवं सक्रिय बनाने की चेष्टा करनी चाहिए । यदि ऐसा हो सका तो समझना चाहिए कि अनेक क्षेत्रों में बिखरी हुई एक–से–एक बढ़कर विपन्नताओं में से प्रत्येक का हल ढूँढ़ लेना सम्भव हो गया ।

संसार में सदा से ही यह क्रम चला आ रहा है कि प्रबुद्ध व्यक्ति जिस दिशा में पिल पड़े उधर ही जादू जैसा चमत्कार उत्पन्न हो गया । बुद्ध अपने शिष्यों के साथ अपने समय के वातावरण को पलटने के लिए उठ खड़े हुए तो उस समय का तांत्रिकी भ्रष्टाचार देखते–देखते तिरोहित हो गया । स्वार्थ और विलास में आकण्ठ मग्न जनता में से हजारों–लाखों भिक्षु–भिक्षुणी निकल पड़े । विलासिता पर लात मारकर उन्होंने संन्यास की प्रव्रज्या ली और भारत में ही नहीं सारे एशिया को बौद्ध धर्म में दीक्षित कर दिया । ईसा के प्रबुद्ध शिष्यों ने दो हजार वर्ष के भीतर संसार की एक तिहाई जनता को ईसाई धर्म में दीक्षित कर दिखाया । गाँधी ने हजार वर्ष की गुलामी से दीन–हीन बने भारत में अपने सौ–दो–सौ विश्वस्त साथियों के द्वारा ऐसी प्रचण्ड हलचल उत्पन्न कर दी कि समर्थ अंग्रेजों को पलायन करते ही बना । मार्क्स के अनुयायियों ने संसार के एक तिहाई भाग पर अपने विचारों का शासन स्थापित कर लिया और बाकी के मस्तिष्क पर वह विचारधारा छाई चली जा रही है ।

प्रबुद्ध वर्ग का महत्व–संसार में जितनी भी राजक्रान्तियाँ, समाज क्रान्तियाँ, धर्म–क्रान्तियाँ, अर्थ–क्रान्तियाँ हुई हैं, उनमें थोड़े प्रबुद्ध लोगों के ही व्यक्तित्व काम करते रहे हैं । वैज्ञानिक अन्वेषणों में इसी वर्ग को सारा श्रेय है । स्वार्थी और संकीर्ण व्यक्ति अपने शौक, मौज की उच्छृंखलता में लगा रहेगा, उसे एकाग्रता और तन्मयतापूर्वक किसी खोज में अपने को खपा देने की भावना ही कब उठेगी । सैनिकों में जब भय और लोभ का परित्याग कर देश भक्ति की भावना प्रबल होती है तभी वे किसी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

युद्ध में विजयी हो पाते हैं अन्यथा अच्छे शस्त्र, साधन होते हुए भी कायर सेना के पाँव उखड़ने में देर नहीं लगती । जिस क्षेत्र में भी देखिए प्रबुद्ध व्यक्तित्व ही चमत्कार उत्पन्न कर रहे दिखाई पड़ते हैं ।

मनुष्य में भी शक्ति भरी पड़ी है । उसका खर्च आमतौर से इन्द्रिय तृप्ति और संकीर्ण स्वार्थपरता के सीमित दायरे में होता रहता है । मनुष्यों के मस्तिष्क तृष्णा और वासना के गोरख–धन्धे में उलझे रहते हैं । कौन कितना भोग या जोड़ सका यह दूसरी बात है, अधिकांश तो इनमें से असफल ही रहते हैं । जो भोगने और जोड़ने में थोड़े सफल भी हो जाते हैं, अन्ततः उनके हाथ भी कुछ रहता नहीं, वे उपलब्धियाँ इधर–उधर ही बिखर जाती हैं । यदि कोई विवेकवान् व्यक्ति जीवन दर्शन को समझ ले और यह सोचे कि उसे शरीर यात्रा की नगण्य आवश्यकताओं की ही पूर्ति करनी है, तो यह थोड़े से समय और श्रम से हो सकती है, फिर बची हुई शक्तियों को संकीर्णता की मूर्खता में बर्बाद करने की अपेक्षा उन्हें महत्तर उद्देश्य के लिए नियोजित क्यों न कर दिया जाय, तो निश्चित ही उसे यही उचित मालूम पड़ेगा । जिसने इस औचित्य की ओर कदम बढ़ाया उनकी यात्रा सफल ही हुई ।

सर्वोपयोगी साहस–पिछले स्वाधीनता संग्राम में जिन लोगों ने अपने छोटे–से–छोटे स्वार्थों का परित्याग कर जेल–यात्रा तथा दूसरे त्याग एवं साहस भरे काम किए थे, उनमें से कितने ही राष्ट्र के मूर्धन्य नेता बने और वह श्रेय प्राप्त कर सके जो संकीर्णता की परिधि में पड़े रहने पर वे कदापि प्राप्त न कर सके होते । गाँधी, पटेल, नेहरू, दास, मालवीय आदि मामूली वकील ही तो थे । उसी पेशे को छाती से चिपकाये बैठे रहते तो अन्त तक एकाध कोठी–कमरा बना लेते और दस–बीस हजार रुपये बच्चों को छोड़ जाने में ही सफल होते । कबीर, रैदास, दादू, तुलसी आदि अपने पैतृक पेशे को छोड़ने में हिचकिचाते तो वे निर्धन वर्ग के नगण्य व्यक्ति ही बने रहते । प्रबुद्ध व्यक्ति आरम्भ में त्याग तो अवश्य करते हैं, पर किसी भी दृष्टि से वे कुछ खोते नहीं । जो खोते हैं उससे मिलता अधिक है ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आज की सबसे बड़ी आवश्यकता प्रबुद्धता के उत्पादन एवं अभिवर्धन की है । जिनमें इस प्रकार की उदारता एवं विशालता का बीज मौजूद हो उसे सींचना अत्यधिक आवश्यक है । नर–रत्नों का उत्पादन ऐटम के कारखाने बनाने से भी अधिक महत्वपूर्ण है । यदि देश में आदर्शवादी लोक सेवकों की एक सेना खड़ी की जा सके तो देखते–देखते वातावरण बदल जायगा, वे जमाने को पलटने के लिए खड़े होंगे, तो जनमानस में भरी हुई कुरीतियों, संकीर्णताओं एवं स्वार्थपरताओं को देखते–देखते तोड़–मरोड़ कर रख देंगे । जन–मानस में जब सद्भावनाऐं और आदर्शवादिता की लहरें उठेंगी, तो जिन परिस्थितियों को आज विभीषिका समझा जा रहा है और जो संभाले नहीं संभल रही हैं, देखते–देखते हल हो जावेंगी ।

युग का आह्वान एवं आमंत्रण–यह पंक्तियाँ इस उद्देश्य से लिखी जा रही हैं कि यदि इन्हें पढ़ने वाले के भीतर आदर्शवादिता व धार्मिकता, आध्यात्मिकता का कोई अश विद्यमान हो तो वह उसे अधिक सुविकसित करने का प्रयत्न करे । जीवन की सार्थकता कहाँ है, यह सोचे और यदि यह समझ में आ जाय, कि अपने लिए महापुरुषों की दिशा अपनाना उचित है तो फिर उसे थोड़े साहस से काम लेना चाहिए । पारमार्थिक कार्यों को किए बिना किसी की महानता जाग्रत नहीं हो सकती । जो सोचते बहुत हैं, पर करते कुछ नहीं, वे एक प्रकार के पागल हैं । श्रेष्ठता पर यदि आस्था है तो उस आस्था को परिपक्व करने के लिए उस मार्ग पर चलना भी चाहिए । आज मानव जाति अपने भाग्य का निपटारा करने के केन्द्र–बिन्दु पर खड़ी है, उसे विकास या विनाश में से एक मार्ग चुनने का अविलम्ब फैसला करना है । अब प्रतीक्षा का अवसर नहीं रहा । स्थिति वहाँ पहुँची है, जिसमें इधर होना है या उधर । ऐसी विषम बेला में हमारी प्रबुद्धता यदि जाग्रत हो सके तो उसे आवश्यक प्रतीक्षा किए बिना आज ही चरितार्थ करना चाहिए । कुछ करने के लिए आज ही कटिबद्ध होना चाहिए ।

इस दिशा में पहला कदम यही हो सकता है कि हम अपनी तृष्णा पर काबू प्राप्त करें और आलस्य को, भीरुता को कुचल दें । गुजारा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जितने में हो सकता हो, उतनी ही कमाई पर्याप्त मानी जाय । आठ घण्टा सोने में, आठ घण्टा कमाने में, चार घण्टा इधर–उधर में और चार घण्टा लोक–मंगल के कार्यों में लगाने की व्यवस्था बना लेनी चाहिए और उस पर दृढ़तापूर्वक चलते रहना चाहिए । इतना हर स्थिति का व्यस्त और अभावग्रस्त मनुष्य भी कर सकता है । पूरा समय पेट के लिए खर्च कर डालने पर हम नर–पशु की संज्ञा में ही गिने जा सकते हैं । हर विचारशील को इस कलंक से बचना चाहिए और अपने दैनिक क्रम में लोकमंगल के लिए समय लगाते रहने की निश्चित व्यवस्था कर लेनी चाहिए ।

जिनके पास गुजारे के लिए पैतृक सम्पत्ति मौजूद है, उनके लिए तो और अधिक कमाई करने की बात सोचना भी अनुचित है । ईश्वर ने उन्हें यह सुविधा दी ही इसलिए है कि गुजारे के बारे में निश्चिन्त रहकर शेष समय परमार्थ कार्य में लगा दें । यदि वे ऐसा नहीं करते, तो ईश्वर के सम्मुख अपराधी ही सिद्ध होंगे । जिनके बच्चे कमाने–खाने लगे, जिन्हें पेन्शन मिलती है, उन्हें भी अपना सारा समय अपनी प्रबुद्धता को सार्थक बनाने में लगा देना चाहिए । जिनके विवाह नहीं हुए हैं, जिनकी कम सन्तानें हैं, उन्हें घरेलू झंझट अधिक बढ़ाने से पूर्व सौ बार सोचना चाहिए और विचारना चाहिए कि क्या वे निरर्थक नहीं हैं, जंजाल बढ़ाने की अपेक्षा जीवन का सदुपयोग किसी उत्कृष्ट मार्ग में चलकर ही कर सकते हैं । विवेक उनको यही सलाह देगा कि मानवता की, विराट् ब्रह्म की सेवा की जिन घड़ियों में अनिवार्य आवश्यकता पड़ रही है, उन घड़ियों में उनका स्थान कहाँ है और उन्हें क्या करना चाहिए ?

समृद्ध बनने की लिप्सा छोड़ें–जिनके पास जितना समय, शक्ति, सामर्थ्य, प्रतिभा, ज्ञान तथा वैभव हो उन्हें उसे विश्व–मानव की अमानत समझ कर उसी के लिए समर्पण करने का संकल्प करना चाहिए । जिस समाज में हम रह रहे हैं, जिसमें हमारे बच्चों को रहना है, उसे उत्कृष्ट एवं सुव्यवस्थित बनाना हमारे और अपने बच्चों के हित में है । दुष्ट और दूषित वातावरण में रहकर हम समृद्ध एवं सुसंस्कृत होते हुए भी सुखी नहीं रह सकते । इसके विपरीत यदि आस–पास का वातावरण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सज्जनता एवं सद्भावना पूर्ण रहे तो अपेक्षाकृत अभावग्रस्त परिस्थितियों में रहकर भी आनन्द एवं उल्लास भरा जीवन जिया जा सकता है । वस्तुतः दूरवर्ती स्वार्थों की दृष्टि से भी यह उचित ही होगा कि हम अपनी शक्तियों का एक भाग लोकमंगल का, नव निर्माण का प्रयोजन पूर्ण करने में लगावें ।

युग परिवर्तन का श्रीगणेश इस प्रकार होगा कि जिनकी अन्तरात्मा में भगवान ने देश, धर्म और की बात सोचने–समझने की दूर दृष्टि दी हो, वे अपना जीवन लक्ष्य भोग से बदलकर त्याग का कर लें । समृद्ध बनने की महत्वाकांक्षा को पैरों तले कुचल दें और प्रबुद्ध बनने में गर्व गौरव अनुभव करने लगें । इच्छा हो तो अवसर सहज ही मिल जाता है । जो बात महत्वपूर्ण प्रतीत होती है, उसे करने के लिए न फुरसत का अभाव रहता है और न सुविधा का । आज मूढ़ जनता की ही नहीं प्रबुद्ध लोगों की स्थिति भी यह है कि वे लम्बी–चौड़ी योजनायें बनाने, वाद–विवाद एवं आलोचना करने में तो बहुत शिर खपाते हैं, पर रचनात्मक कार्य करने के लिए जब समय आता है तो बगलें झाँकते हैं, दाँत निपोरते हैं और तरह–तरह के बहाने बनाते हैं । इस स्थिति को बदला जाना चाहिए । भावनाशील लोगों को आदर्शवाद की चर्चा करते रहने की परिधि तोड़कर अब कुछ करने के लिए आगे आना चाहिए । यदि यह किया जा सका तो समय को तेजी से पलटता हुआ हम अपनी आँखों के सामने ही देखेंगे ।

लगन क्या नहीं कर सकती ?–एक लगनशील व्यक्ति अपने अनेक साथी–सहचर पैदा कर सकता है, जुआरी, शराबी, व्यभिचारी जब अपने कई साथी पैदा कर सकते हैं, तो प्रबुद्ध व्यक्ति वैसा क्यों नहीं कर सकते ? डाकुओं के छोटे–छोटे गिरोह जब एक बड़े क्षेत्र को आतंकित कर सकते हैं, तो सही लोगों के संगठन क्या कुछ नहीं कर सकते ? लगन की आग बड़ी प्रबल है, यह जिधर भी लगती है, दावानल का रूप धारण करती है । युग–निर्माता महापुरुष अकेले ही चले हैं, लोगों ने उनका विरोध–प्रतिरोध भी खूब किया है, फिर भी वे अपनी लगन के आधार पर अद्भुत सफलता प्राप्त कर सके । यही मार्ग हर लगनशील के लिए खुला पड़ा है । जमाना खराब है, लोग बुरे हैं, कोई

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हमारी सुनता नहीं आदि शब्दों के पीछे कार्यकर्त्ता की निराशा, उदासीनता और लगन की कमी की ही झाँकी मिलती है । करने वालों ने पत्थर पर पेड़ उगाकर दिखाये हैं । बालू से तेल निकाला और ऊसर में खेती की है । लगनशील व्यक्ति क्या नहीं कर सकता ? हर स्थिति में हर काम कर सकता है ?

जिनमें लगन हो उन्हें जन–जागरण के लिए अपनी सामर्थ्य और जो कुछ कर सकना सम्भव हो वह करने की ठान–ठाननी चाहिए । बातों का युग बहुत पीछे रह गया, अब कार्य से ही किसी व्यक्ति के झूँठे या सच्चे होने की परख की जायगी । हमें कार्यक्षेत्र में उतरना चाहिए और अपनी सेवा–श्रृंखला का धर्म–तंत्र को माध्यम बनाकर आगे बढ़ाना चाहिए ।

भावनाओं पर प्रभाव–जन–मानस को प्रभावित करने के दो ही मार्ग हैं–एक राजनीति दूसरा धर्म–तंत्र । दोनों ही की अपनी–अपनी सीमा और उपयोगिता है । शासन व्यवस्था, अर्थनीति, अपराधों का दमन, शिक्षा, कानून, यातायात, वैज्ञानिक शोध, बड़े निर्माण आदि भौतिक जीवन को प्रभावित करने वाले कार्य राजनीति की सीमा में आते हैं । राजनेता इन प्रयत्नों में जुटे रहते हैं, उनका क्षेत्र भी यही है । धर्म–तंत्र भावनाओं का स्पर्श करता है, आस्थायें स्थापित करता है और उन पर चलने की प्रेरणा करता है । ब्रह्मचर्य पालन, उपवास, उपासना आदि का निर्देश राजकीय कानूनों द्वारा नहीं दिया जा सकता, यह भावनाऐं तो धर्म–तंत्र के द्वारा ही पैदा की जा सकती हैं । चोर को पकड़ने और जेल पहुँचाने में राजतंत्र सफल हो सकता है, पर उसे धर्मात्मा संत के रूप में बाल्मीकि और अंगुलिमाल की तरह बदल देने की क्षमता धर्म–तंत्र में ही हो सकती है ।

राजतन्त्र बनाम धर्म–तंत्र–राजनेताओं को आमतौर से कुटिलता, निष्ठुरता, मिथ्या प्रचार, दुराव आदि अनुपयुक्त आदर्शों का सहारा लेना पड़ता है । इसलिए जनता उनकी प्रतिभा का लोहा भले ही माने पर भावना क्षेत्र में पथ–प्रदर्शक स्वीकार नहीं कर सकती । यह कमी धर्म नेताओं को पूरी करनी पड़ती है । मनुष्य में आदर्शवादिता के प्रति

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

निष्ठा, सद्गुणों के अभिवर्धन की साधना और सेवा–सहयोग की सद्भावना का उभार धर्मतन्त्र के ही माध्यम से हो सकता है । उसका विशालकाय ढाँचा बनाया ही इस प्रयोजन के लिए गया है ।

राजनीति क्षेत्र में भौतिक आकर्षण अधिक होने से इस क्षेत्र में कार्यकत्ताओं की कमी नहीं रहती । कभी–कभी तो आवश्यकता से अधिक भी हो जाती है । आज उस क्षेत्र में इतनी भीड़ है कि भरी हुई रेलगाड़ी की तरह नई सवारियों के लिए उसमें घुस सकने तक की गुञ्जायश नहीं है । धर्मतन्त्र का मंच खाली पड़ा है । आवश्यकता भी इसी के सुदपयोग की है । प्रबुद्ध व्यक्तियों को इसी माध्यम को अपनाना चाहिए और युग की महत्वपूर्ण आवश्यकता को पूरा करने के लिए इस क्षेत्र में साहसपूर्वक प्रवेश करना चाहिए ।

धर्म–तंत्र का दर्शन एवं आवरण इतना व्यवस्थित एवं सांगोपांग है कि उसके आधार पर मानवीय अन्तःकरण को आदर्शवादिता की पृष्ठभूमि में सफलतापूर्वक विकसित किया जा सकता है । इस धर्म दर्शन को सही रूप में अपनाने पर जनसाधारण की मनोभावनाऐं उत्कृष्टता की रीति–नीति अपनाने के लिए तत्पर की जा सकती हैं । आज की मूलभूत समस्या मानवीय आस्थाओं से भौतिकता की, पाशविकता की निकृष्टताऐं विलग कर आध्यात्मिकता की उत्कृष्टता में संलग्न करने की है । इसके लिए धर्मतंत्र के अतिरिक्त और कोई दर्शन, आदर्श, माध्यम, वाद समर्थ हो ही नहीं सकता ।

निकृष्टता को उत्कृष्टता में बदलें–यह ठीक है कि आज धार्मिक क्षेत्र में गुण्डागर्दी का बोलबाला है । ढोंग–पाखण्ड का विशालकाय आवरण बना खड़ा है । धूर्तों ने अपना वर्चस्व कायम कर धर्म को एक सस्ते व्यवसाय के रूप में परिणत कर लिया है । भोली जनता की श्रद्धा–भावना का बुरी तरह शोषण हो रहा है और भ्रान्तियों के दल–दल में फँस जाने के अतिरिक्त और कुछ भी उसे मिलता नहीं है । इसी स्थिति को देखकर विचारशील लोग उस क्षेत्र में प्रवेश करने से कतराते हैं और दूर से ही नमस्कार करना उचित समझते हैं, पर विचारपूर्वक देखा जाये तो प्रतीत होगा कि इस प्रकार की उपेक्षा से काम चलने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वाला नहीं है । विवेकशील लोगों को आगे बढ़कर सफाई करनी चाहिए धूर्तों का वर्चस्व इसलिए है कि सच्चे और तेजस्वी लोग उस क्षेत्र में प्रवेश नहीं कर रहे हैं । उत्कृष्टता के सामने धूर्तता ठहर नहीं सकती । चरित्रवान और मनस्वी लोग जब इस क्षेत्र में उतरेंगे तो उनकी तुलना में धूर्तता की कलई सहज ही खुल जायगी और उनका पलायन एवं बहिष्कार होते देर न लगेगी । यदि सच्चे लोग उस क्षेत्र में प्रवेश ही न करें तो फिर मैदान उन्हीं श्रृगालों के लिए खुला पड़ा रहेगा, जो गन्दगी और दुर्गन्ध से इस पवित्र मंच को घृणित बनाने में कुछ कमी नहीं रहने दे रहे हैं ।

किसी वस्तु को बुरी–बुरी कहते रहने से कुछ काम नहीं बनता । उसकी स्थान पूर्ति के लिए अच्छी चीज उपस्थित करनी पड़ती है । शून्यता की स्थिति नहीं रह सकती । अच्छी न मिलेगी तो लोग बुरी को अपनावेंगे । बुराई से विरक्ति उत्पन्न करनी हो तो अच्छाई सामने उपस्थित करनी चाहिए । धर्म क्षेत्र में चल रहे अनाचार से कुड़कुड़ाते तो बहुत लोग हैं, पर उसका विकल्प प्रस्तुत नहीं करते, हमें विकल्प उपस्थित करना चाहिए । धर्म का वास्तविक स्वरूप क्या है, धर्मजीवी, धर्मोपदेशक अपना कार्यक्रम किस प्रकार निर्धारित करें और चलावें, उसका नमूना यदि लोगों के सामने रखा जाय तो भले–बुरे का, खरे–खोटे का अन्तर तुरन्त सामने आ जायेगा और लोग यह सहज ही निर्णय कर सकेंगे कि किसे अपनाया और किसे छोड़ा जाय ? आज जब कोई विकल्प है ही नहीं तो जो भेड़िया–धसान चल रही है, उसी से काम चलाने और सन्तोष करने के लिए विवश होना पड़ता है ।

निरर्थक झिझक दूर करें–सुशिक्षित और प्रबुद्ध व्यक्ति धर्मक्षेत्र में उतरते हुए दो कारणों से कतराते हैं । एक तो यह कि उन्हें जनता की निगाह में निठल्ले ढोंगियों की श्रेणी में हेय गिना जाने लगेगा । दूसरे उन्हें कर्मकाण्डों की टंट–घंट में बहुत–सा निरर्थक समय गँवाना पड़ेगा । यह दोनों आशंकायें थोड़ी गहराई में विचार करने पर निरर्थक सिद्ध हो जाती हैं ।

कुछ समय पहले चर्खा चलाना हेय माना जाता था, क्योंकि गरीब विधावायें, जुलाहे, मजदूरनियाँ उसे कातती थीं । जो चर्खा कातता था, वह उसी स्तर का गिना जाता था, पर जब गाँधीजी ने चर्खा अपनाया

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और नेहरू, पटेल सरीखे बड़े आदमी उसे कातने लगे तो चर्खा गर्व, गौरव, राष्ट्रीयता और देश–भक्ति का प्रतीक बन गया । धर्म क्षेत्र में जब बुद्ध, शंकराचार्य, गाँधी सरीखे लोग आते हैं, मीरा, सूर, तुलसी, विवेकानन्द रामतीर्थ जैसे ऊँचे व्यक्तित्व प्रवेश करते हैं तो कोटि–कोटि अन्तःकरण धार्मिक श्रेष्ठता से ओत–प्रोत हो जाते हैं और उस मार्ग का अनुसरण करते हुए अपने को कृतकृत्य मानते हैं । बुद्ध के शिष्यों में अशोक, अम्बपाली, अंगुलिमाल जैसे प्रतिभाशाली लोग भी थे । साधारणतया वे लोग धर्म परम्परा से प्रतिकूल जीवन जी रहे थे, उन्हें धर्म के प्रति कोई श्रद्धा न थी, पर उत्कृष्ट व्यक्तित्वों ने अपनी प्रबल छाप छोड़ी और प्रतिभाशाली लोगों को भी अपने साथ ले लिया । नेहरू न तो अहिंसावादी थे और न आस्तिक फिर भी वे गाँधी के व्यक्तित्व के आगे झुक गये और उनका दाहिना हाथ बनकर काम करने लगे ।

धर्म क्षेत्र को आज हेय इसलिए समझा जाता है कि उसमें ओछे और अवांछनीय व्यक्तित्व भरे पड़े हैं । उन्होंने धर्म को बदनाम किया है । इतनी उपयोगी एवं उत्कृष्ट आस्था के प्रति लोगों को नाक–भौं सकोड़ने पड़ रहे हैं । इस स्थिति को बदलने का एक ही उपाय है कि बढ़िया लोग उस क्षेत्र में प्रवेश करें । इससे धर्म के प्रति फैली हुई अनास्था भी दूर होगी और उसे ढोंग न समझकर आस्थाओं का प्रशिक्षण समझा जाने लगेगा । अवांछनीय व्यक्तित्वों का निराकरण भी तभी होगा, जब सही व्यक्तित्व अपना उचित स्थान ग्रहण कर उनकी निरुपयोगिता सिद्ध कर देंगे । यदि ऐसा न किया गया तो सट्टा बताने वाले गंजेड़ी बाबा और दक्षिणा बटोर कर स्वर्ग का पासपोर्ट देने वाले पुरोहित इसी प्रकार जनता को पथ भ्रष्ट करते हुए उसका शोषण करते रहेंगे । सच्चे सन्त, सच्चे ब्राह्मण, सच्चे धर्मोपदेशक यदि पैदा न किए जा सके तो झूठों और धूर्तों को उनके आसन से हटाया–गिराया न जा सकेगा ।

प्रचण्ड जन–शक्ति का उपयोग–जनता की प्रचुर शक्ति धर्म प्रयोजनों में खर्च होती है । मन्दिर, मठों के नाम अरबों रुपया हर साल खर्च होता है, धार्मिक मेलों पर करोड़ों रुपयों की धनराशि खर्च होती है । ८० लाख व्यक्तियों का निर्वाह इसी क्षेत्र में होता है । विशाल

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भवन और साधन विद्यमान हैं, इन सबका यदि रचनात्मक उपयोग हो सके तो धर्म की ध्वजा सारे संसार में फहराने लगे और उससे जनता का इतना बड़ा हित हो कि हर व्यक्ति धर्मानुयायी बनने में अपना गौरव अनुभव करने लगे । सार्वजनिक सेवा कार्यों के लिए चन्दा से एक-एक पैसा जुटाना मुश्किल पड़ता है, पर यदि हम धर्म का आधार लेकर आगे चलें तो भारत की धार्मिक जनता इन भावनात्मक नव-निर्माण के रचनात्मक कार्यों में किसी प्रकार का आर्थिक अभाव न रहने दे ।

गाँधी जी ने स्वराज्य की लड़ाई 'महात्मा' बनकर लड़ी थी । रामराज्य की स्थापना और गौ-रक्षा की घोषणा उन्होंने की थी । कीर्तन और भजन को अपने आन्दोलन में सम्मिलित किया था । इस देश की नब्ज वे जानते थे, इसलिए उचित रीति-नीति अपनाकर वे स्वाधीनता संग्राम के विजेता बने । दूसरे नेता इस तथ्य को समझ न सके थे, इसलिए पत्तों पर डोलते रहे, गाँधी जी ने जड़ को पकड़ा और जादू की तरह निर्धारित लक्ष्य की ओर बढ़ गये । राष्ट्र का भावनात्मक नव-निर्माण करने के लिए बौद्धिक एवं सामाजिक क्रान्ति की आवश्यकता पूर्ण करने के लिए हम धर्मतन्त्र के माध्यम से जितनी अच्छी तरह, जितनी सुविधा के साथ और जितने शीघ्र सफल हो सकते हैं, उतने और किसी प्रकार नहीं ।

लोक शिक्षण के लिए धार्मिकता का सहारा लिया जाय

धर्म प्रक्रिया के माध्यम से व्यक्ति निर्माण और परिवार तथा समाज निर्माण का कार्य जितनी अच्छी तरह सम्पन्न किया जा सकता है, उतना अन्य किसी प्रकार नहीं । बुद्धि को प्रभावित करने वाले अनेक आधार मौजूद हैं-समाज शास्त्र, राजनीति, अर्थशास्त्र आदि का सहारा लेकर व्यक्ति को कुछ भी समझाया जा सकता है, पर अन्तःकरण की गहराई तक कुछ उतारना हो तो इसके लिए एक मात्र आधार अध्यात्म ही रह जाता है । वस्तुतः अन्तरंग को स्पर्श करने वाली, सुधारने और ढालने की विद्या का नाम ही अध्यात्म है । इसके अतिरिक्त न तो आस्थायें बदली जा सकती हैं और न निष्ठायें प्रतिष्ठापित की जा सकती हैं । सो हमें इस आधार की महत्ता को हृदयंगम करना ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चाहिए और भावनात्मक नव-निर्माण के लिए प्रधान रूप से उसी माध्यम को अपनाना चाहिए ।

अर्थशास्त्र की दृष्टि से बूढ़े से बूढ़े गाय-बैल आदि जानवरों को जीवित रखना प्रत्यक्ष अर्थ हानि है । उन्हें कसाई द्वारा काटे जाने पर माँस की प्राप्ति और चारे तथा स्थान को बचत-लाभ समझा जाना चाहिए । जहाँ धन मुख्य है वहाँ उस पशु की अब तक की सेवा का कोई मूल्य नहीं, कृतज्ञता बरतने से हानि होती है, तो हानि नहीं सहनी चाहिए, भले ही कृतघ्न बना जाय । अर्थशास्त्र यही प्रतिपादन करेगा । उसके अनुसार बूढ़े बेकार जानवर का काटना दया-धर्म के कारण रोका नहीं जाना चाहिए । भौतिकवादी अर्थशास्त्र यही प्रतिपादित करता है । अर्थ विशेषज्ञों की यही सलाह रहती है । इस मान्यता के अनुसार ठीक वही व्यवहार माता-पिता के वयोवृद्ध हो जाने पर किया जाना चाहिए । हिटलर के जर्मनी और माओ के चीन में बहुत कुछ ऐसा हुआ भी है । अभी यह लुक-छिप कर है । पीछे जब भौतिकवादी अर्थवादी आधार ही प्रबल हो जायगा तो बूढ़ों के वध का वैसा ही प्रतिपादन होने लगेगा जैसे इन दिनों गाय-बैल आदि को काटने की बात का समर्थन किया जा सकता है ।

आध्यात्मवादी मान्यताऐं भौतिक आधार पर एक सीमा तक ही प्रतिपादित की जा सकती हैं । व्यक्ति का भौतिक स्वार्थ-रसास्वादन तो संयम, सदाचार, सेवा से घटता ही है । भौतिकवादी मान्यताऐं जिसमें समाज शास्त्र, अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र आते हैं, इन बातों का उथला समर्थन ही कर सकते हैं । त्याग-बलिदान की बात बहुत जोर देकर नहीं कही जा सकती । जब भौतिकवादी मान्यताऐं आत्मा का अस्तित्व ही नहीं मानतीं । ईश्वर, परलोक, पुनर्जन्म, कर्मफल जैसे प्रतिपादनों को अवैज्ञानिक कहती हैं और इस शरीर के साथ ही जीवन का अन्त मानती हैं फिर सुखोपभोग के लिए कुछ भी अनर्थ कर गुजरने से किसी को कैसे रोका जा सकेगा ? कानून की पकड़ से बचते हुए आदमी अपने शरीर सुख के लिए कुछ भी करने से क्यों चूकेगा ? उसे लोक कल्याण, सेवा धर्म, आत्म-सन्तोष, पुण्य-परमार्थ, त्याग-बलिदान

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के आदर्शों से सहमत कैसे किया जा सकेगा ? भौतिकवादी शास्त्र देश हित समाज व्यवस्था की बात का प्रतिपादन तो करते हैं, पर यह समझा नहीं पाते कि व्यक्ति को देश भक्ति के लिए कष्ट सहने में अपना निज का क्या लाभ या क्या सुख है ? मनुष्य मूलतः व्यक्तिवादी है । सो उसे अपना लाभ पहले सूझता है । समाज का पीछे ।

आत्मा का अस्तित्व न मानने वाला भौतिकवाद अन्तःप्रेरणा को विकसित कर स्वेच्छापूर्वक आदर्शवादी उत्कृष्टता की ओर किसी को उत्साहित नहीं कर सकता । उसके पास तो शासन सत्ता के बल नियन्त्रण द्वारा जनता से देश हित के लिए बलात् कुछ करा लेने का ही एक शस्त्र रह जाता है । आदमी को गधे की तरह शासन के परवश बनाकर उससे जबरदस्ती कुछ त्याग कराने की मजबूरी उपस्थित की जा सकती है । इसमें वह प्रकाश और उल्लास कहाँ जो स्वेच्छापूर्वक आदर्शों को अपनाने वाले के लिए सम्भव है ।

इस तत्वदर्शन पर हमें हजार बार विचार करना चाहिए और इस निष्कर्ष पर सुनिश्चित रूप से पहुँच जाना चाहिए कि व्यक्ति को ऊँचा उठा सकना और समाज में आदर्शवादी वातावरण उत्पन्न करना केवल धर्म और अध्यात्म के तत्वदर्शन द्वारा ही सम्भव है । सो हमारी समस्त गतिविधियाँ, समस्त शिक्षाऐं, समस्त योजनाऐं मूलतः धर्म की आधार भूमि पर प्रतिष्ठापित होनी चाहिए और जो कुछ प्रतिपादन करना है—जो प्रचलन करना हो उसकी पृष्ठभूमि धर्म और अध्यात्म ही होनी चाहिए । विश्व निर्माण के लिए युग परिवर्तन के लिए प्रथम आवश्यकता भावनात्मक नव निर्माण की है । ज्ञान यज्ञ आन्दोलन इसी प्रयोजन के लिए चल रहा है । बौद्धिक क्रान्ति की प्रथम प्रक्रिया इसी उद्देश्य को लेकर अग्रगामी हो रही है सो हमें भूल नहीं जाना चाहिए । इस समस्त चिन्तन और क्रियाकलाप का ढाँचा धर्म और अध्यात्म की नींव पर ही खड़ा किया जा सकता है ।

इस आधार को खोकर यदि भौतिक दृष्टि लेकर चल पड़े तो सरकारी समाज कल्याण के ढकोसले की तरह हम भी विज्ञापन बाजी तक कागजी कार्यवाही तक सीमित रह जायेंगे । योजनाऐं कितनी ही आकर्षक क्यों न हों उनको आगे धकेलने वाले लोग जब आदर्शहीन,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वार्थी और संकीर्ण दृष्टिकोण के हों तो उनकी दृष्टि उस योजना से अधिकाधिक अपना लाभ लेने की होगी । इस विचित्रता में कोई योजना सफल नहीं हो सकती । कोई भी महान कार्य, सदा आदर्शवादी आस्था लेकर चलने वाले लोग ही पूरा करते हैं । यदि इस विशेषता का अभाव रहा तो फिर योग्यता, शिक्षा तथा कौशल कितना ही बढ़ा–चढ़ा हो, वह व्यक्तिगत लाभ की ओर ही झुकेगा और वह समाज को हानि पहुँचा कर ही सम्भव हो सकता है । यह सब हम आँखों से देख रहे हैं । उसी आधार पर अपने मिशन का भी प्रतिपादन किया जाने लगा तो एक अलग लेबिल भले ही लगा लें, अपनी गाड़ी भी उसी पटरी पर लुढ़कने लगेगी ।

हजार बार कहा जा चुका है और अभी लाख बार और कहना पड़ सकता है कि व्यक्ति निर्माण और समाज निर्माण के लिए आदर्शों की प्रतिष्ठापना के लिए हमें आध्यात्मिक आधार अपनाने के अतिरिक्त और इधर–उधर नहीं झाँकना चाहिए । भौतिकवादी मान्यताऐं तो कुछ दिन बाद बूढ़े गाय–बैलों की तरह बूढ़े माँ–बाप को जहर देकर खाद के गड्ढे में दबा देने की योजना सामने रखने वाली हैं । वे जलाने या गाड़ने से भी इन्कार करेंगी । जलाने में लकड़ी खर्च होती है और गाड़ने में जमीन रुकती है । दोनों ही तरीके आर्थिक दृष्टि से हानिकारक हैं । मरने वाले को गोबर के गड्ढे में सड़ने के लिए दाब देना ठीक है ताकि अच्छी खाद बन सके । हमें उन आधारों को भौतिक क्रिया–कलाप तक ही सीमित रहने देना चाहिए । जहाँ आस्थाओं के, आदर्शों के प्रतिपादन का प्रश्न हो वहाँ विशुद्ध रूप से आत्म विद्या का ही सहारा लेना चाहिए ।

ज्ञान यज्ञ का विस्तार भावनात्मक नव निर्माण का प्रथम चरण है। इस आधार पर प्रभावित लोगों को ही रचनात्मक और संघर्षात्मक प्रयोजनों में संलग्न किया जा सकना सम्भव होगा । जो कुछ हम सिखायें, समझायें उसमें आस्था और श्रद्धा का समन्वय करें । ऋषियों के तत्व चिन्तन की सहायता लें और आध्यात्मिक मान्यताओं का सहारा लें । इससे भावनाशील जनता को अपेक्षाकृत अधिक जल्दी और अधिक अच्छी तरह प्रभावित एवं प्रेरित किया जा सकेगा । भावना का प्रतिपादन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बुद्धि द्वारा किया जाय हर्ज नहीं, पर यदि बुद्धिवाद में ही सब कुछ मान लिया गया तो फिर आदर्शों का प्रतिपादन गम्भीरतापूर्वक न किया जा सकेगा और न किसी में इतना भावावेश उत्पन्न किया जा सकेगा कि वह आत्म संयम अपना कर परमार्थ के लिए कुछ करने लायक साहस भरा कदम उठा सके ।

यह सोचना ठीक नहीं कि धर्म और अध्यात्म की मान्यताऐं प्रतिगामी हैं, उसमें अन्ध–विश्वास और रूढ़िवाद भरा पड़ा है । यह बात इसी अंश में ठीक है कि वैसी घुस–पैंठ भी उसमें हुई है और जहाँ–तहाँ प्रतिगामिता भी विद्यमान है, पर उसमें प्रगतिशील विचारधारा उससे कहीं अधिक है । हमारी दृष्टि 'बाबा वाक्यं प्रमाणम्' की न हो । हंस वृत्ति रखें । जो उपयोगी है, प्रगतिशील है उसी का सहारा लें । इस दृष्टि को रखकर किसी भी प्रतिगामी कहे जाने वाले ग्रन्थ या सम्प्रदाय में ऐसे तत्व प्रचुर मात्रा में मिल सकते हैं जो युग निर्माण की प्रखर विचारधारा का समर्थन कर सकें । हमें उतने ही उपयोगी अंश को प्राचीनता में से उभारना चाहिए और जहाँ प्रतिगामिता दिखाई पड़े, वहाँ उसे अनावश्यक समझकर उपेक्षा में डाल देना चाहिए । गड़बड़ी तब पड़ती है, जब जो कुछ लिखा–कहा गया है उसका एक–एक अक्षर पत्थर की लकीर मानने के लिए अपनी विवेकशीलता, सूक्ष्म दृष्टि और समय की आवश्यकता की उपेक्षा कर दें । जोखिम अंधानुकरण में है । उपयोगी तत्व ढूँढ़ निकालने की पद्धति अपनाकर हमें क्रांतिकारी परिवर्तनों के समर्थन में प्राचीन प्रतिपादनों से पर्याप्त सहायता मिल सकती है । सो अपनी नीति बिल्कुल यही होनी चाहिए, गायत्री माता का वाहन हंस है । हंस को नीर–क्षीर विवेक आता है । हम इसी दृष्टि को लेकर चलें तो हमें सभी धर्म ग्रन्थ, सभी सम्प्रदाय अपने प्रतिपादन का मुक्त कण्ठ से समर्थन करते दिखाई देंगे ।

भावनात्मक वातावरण बनाने के लिए कर्मकाण्डों की प्रक्रिया का अपना महत्व है । उसके साथ समन्वित शिक्षाऐं गरम लोहे पर चोट लगाकर उसे ढालने–मोड़ने की तरह स्थिर प्रभाव डालने वाली सिद्ध होती हैं । हमें इस प्रयोजन को पूरा कर सकने में समर्थ, सुयोग्य व्यक्ति

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तैयार करने चाहिए, जो सुसज्जा और आकर्षण का वातावरण बनाने में निपुण हों और जिस स्तर का जन समूह एकत्रित है उसी मनोभूमि के अनुरूप प्रवचन करने की सूझबूझ रखते हों । शाखाओं को इस प्रकार के व्यक्ति जुटाने चाहिए । इस प्रयोजन की पूर्ति के लिए आवश्यक कर्मकाण्ड एवं प्रवचन की पुस्तकें युग निर्माण योजना द्वारा पहले से ही प्रकाशित हैं । इनके आधार पर उन व्यवस्थाओं को सम्पन्न करने की योग्यता थोड़े अध्यवसाय अभ्यास के सहारे सहज ही विकसित की जा सकती हैं ।

जन्मदिन, विवाह दिन, बालकों के संस्कार, विवाह, वानप्रस्थ आदि के विधि–विधान और व्यक्तिगत जीवन के उतार–चढ़ावों का विश्लेषण यदि ठीक तरह किया जा सके तो लोक शिक्षण की एक महती आवश्यकता इससे पूरी हो सकती है । व्यक्ति और परिवार उस परामर्श के आधार पर अपनी प्रगति का पथ प्रशस्त कर सकते हैं ।

त्यौहारों के अवसर पर आमतौर से काम धन्धे से अवकाश रहता है । पूरे दिन छुट्टी न भी हो तो प्रातःकाल दफ्तर, दुकान आदि का काम आरम्भ होने से पूर्व का अथवा रात्रि का समय सभी के लिए अवकाश का हो सकता है । जहाँ जैसी सुविधा हो वहाँ वैसी समय तथा स्थान की व्यवस्था बनानी चाहिए । यदि वर्ष में आने वाले सभी पर्वों में कोई नियमित रूप से सम्मिलित होता रहे और उससे सम्बन्धित समस्याओं के समाधान जो पर्व की विवेचना के रूप में प्रस्तुत होते हैं–सुनता रहे तो उसे अपने समाज की स्थिति, समस्यायें, उलझनें, कठिनाइयाँ, विकृतियाँ समझाने का और उनका हल जानने का अवसर मिल सकता है । यह बहुत ही उत्तम शिक्षा पद्धति है । इससे जन–साधारण को समाजगत अव्यवस्थाओं से उत्पन्न हानियों को रोकने की, प्रेरणा मिल सकती है । इसी प्रकार परिवार के जिन कर्तव्य और उत्तरदायित्वों से साधारण लोग अपरिचित ही रहते हैं, उन्हें जानने एवं संभालने के लिए संस्कार वाले अवसर बहुत ही उपयोगी हो सकते हैं । हर मुहल्ले, गाँव में किसी के घर कोई न कोई संस्कार होता ही रहेगा । उनमें सम्मिलित होकर आदि से अन्त तक पारिवारिक जीवन का स्वरूप, आदर्श भली प्रकार समझा जा सकता है । व्यक्तिगत जीवन में हलचल उत्पन्न करने के लिए

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जन्मदिन मनाने का अपना महत्व है । दाम्पत्य सम्बन्धों में सद्भावना का पुट लगाकर आनन्द–उल्लास की गंगा–यमुना मिला देना 'विवाह दिन' उत्सव मना कर सम्पन्न किया जा सकता है ।

इनके अतिरिक्त भावनात्मक वातावरण में जन–जीवन को ऊँचा उठाने की अन्य प्रक्रियायें भी निर्धारित हैं । सत्यनारायण कथा का हिन्दू समाज में बहुत प्रचार है । पण्डित लोग केवल उस कथा का माहात्म्य सुनाते हैं । लीलावती–कलावती–तुंगध्वज राजा ने क्या किया, कौन–सी कथा सुनी इसका पता ही नहीं चलता । युग निर्माण योजना ने उस कथा को इस प्रकार परिष्कृत किया है कि सत्य को नारायण मानकर लोग सत्य आचरण, सत्य व्यवहार की रीति–नीति अपनायें और सत्य आदर्शों के पालन का व्रत धारण करें । यह शिक्षा सत्य नारायण व्रत कथा में मौजूद है । हम में से कोई सशक्त वक्ता उसे उतने हृदयग्राही ढंग से कह सकता है कि सुनने वाले एक नया प्रकाश ग्रहण कर सकें ।

रामायण कथा का सात दिन का सप्ताह, जिसमें उपयोगी भाग का मिल–जुलकर पारायण और उस ग्रन्थ से भगवान राम की जीवन गाथा से जो शिक्षा मिलती है, उनकी चर्चा पर नित्य प्रातः–सायं प्रवचन किए जाते रहें तो यह रामायण सप्ताह का धर्मानुष्ठान उपस्थित लोगों की जीवन धारा बदलने के लिए घसीटता हुआ दिखाई पड़ेगा ।

इसी प्रकार गीता कथा सप्ताह की भी योजना है । संस्कृत श्लोक ठीक ढंग से पाठ करना और उसका अर्थ समझना हर किसी का काम नहीं है । गीता पद्यानुवाद इसी सामूहिक पाठ योजना के लिए बना और छपा है । सात दिन में प्रतिदिन प्रातः–सायं एक–एक श्लोक की व्याख्या होती रहे तो चौदह प्रवचन हो जाते हैं । समुद्र मंथन से १४ रत्न निकले थे । गीता के सर्वोत्तम १४ श्लोकों की सात दिन में व्याख्या कर देने से गीता का ही नहीं जीवन विद्या का सार भी स्पष्ट रूप से परिलक्षित होने लगता है । इसके लिए गीता कथा पुस्तक भी पहले से ही विनिर्मित है ।

अपने समाज में गीता, रामायण अद्भुत ग्रन्थ हैं, इनमें अपनी संस्कृति का सार तत्व बड़ी खूबी के साथ भर दिया गया है । सात–सात दिन के सप्ताह धर्मानुष्ठान की परम्परा यदि चल पड़े तो उससे नैतिक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और सांस्कृतिक पुनरुत्थान की अभिनव हलचल उत्पन्न होती दिखाई देगी । सभी सम्मेलनों में लम्बे–चौड़े धुआँ–धार भाषणों की अपेक्षा इस धर्म–वातावरण में दिया गया शिक्षण कहीं अधिक हृदयग्राही और स्थिर प्रभाव डालने वाला सिद्ध हो सकता है । सत्यनारायण कथा सुनने किसी भी परिवार–मुहल्ले के लोग रुचिपूर्वक आ सकते हैं, जब कि सामयिक राजनैतिक विचार गोष्ठी की बात सुनकर लोग उतना उत्साह नहीं भी दिखा सकते । प्रतिगामी पण्डित पुरोहित अपनी दान–दक्षिणा में कमी आने की आशंका से कई बार अड़ंगे अटकाते देखे गये हैं । उन्हें समझा दिया जाना चाहिए कि हमारा प्रयोजन आपकी दान–दक्षिणा लेना–छीनना नहीं वरन् धार्मिकता का वातावरण बनाना है ।

भारतीय जनता का ८० फीसदी भाग अशिक्षित है और लगभग ८० प्रतिशत ग्राम–देहातों में ही रहते हैं । शिक्षा की दृष्टि से पिछड़े हुए इस वर्ग को मात्र धार्मिक कथा–गाथाओं की पृष्ठभूमि ही विदित है । राजनीति, समाज शास्त्र, अर्थशास्त्र आदि का प्राथमिक ज्ञान भी जिनके पास नहीं है उनके लिए विवेचनात्मक भाषण बेकार हैं । उन्हें तो उनकी पूर्व जानकारी धर्म परम्परा के साथ मिलाकर ही वह शिक्षण दिया जा सकता है, जो अन्तरंग में भी उतर सके । अपने देश की बहुसंख्या, बौद्धिक स्तर जिस प्रकार का है, उसे ध्यान में रखते हुए यदि धार्मिक शैली अपनाकर आज की स्थिति समझाई जाय और ऊँचे उठने का परामर्श दिया जाय, तो यह तरीका बहुत ही कारगर सिद्ध होगा । गाँधीजी इस देश की मनोभूमि को समझते थे । उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम के राजनैतिक आन्दोलन में सन्तों जैसी प्रवृत्तियाँ जोड़ीं और जनमानस को आकर्षित कर लिया । दूसरे नेता कम कुशल नहीं थे, पर गान्धी जी का जनता के हृदय में अनुपम स्थान होने का कारण उनकी धार्मिकता को ही माना जा सकता है ।

महामना मालवीय, लोकमान्य तिलक के प्रति भारतीय जनता असाधारण श्रद्धा रखती थी, इसका कारण उनके राजनैतिक क्रिया–कलापों के साथ जुड़ा हुआ धर्माचरण ही कहा जायगा । यदि सिद्धान्त रूप से जनसाधारण के लिए धार्मिकता के उपयोग की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आवश्यकता नहीं भी समझें तो उस भारतीय जनता की मनोभूमि को ध्यान में रखते हुए एक कुशल नीति प्रक्रिया मानना ही चाहिए । श्रीजवाहरलाल नेहरू अहिंसा से सिद्धान्ततः सहमत नहीं थे, पर गाँधी जी द्वारा प्रतिपादित सत्याग्रह पद्धति की स्थिति को देखते हुए उपयुक्त नीति मानते थे और उसी आधार पर वे उसे स्वीकार करते थे । जिन्हें सिद्धान्ततः धर्म माध्यम से जन–जागरण की बात रुचती न हो उन्हें भी यह तो मानना ही चाहिए कि विशाल भारत के पिछड़े हुए बहुमत द्वारा अपनाये जाने योग्य लोक शिक्षण धार्मिकता का पुट दिये बिना सम्भव नहीं हो सकता ।

राष्ट्र के समग्र पुनरुत्थान के लिए अभीष्ट प्रशिक्षण धार्मिकता युक्त ही होना चाहिए ।

आवरणों की उपयोगिता–धार्मिक आवरणों को, कर्म–काण्डों को, स्थिर रखने के लिए थोड़ा समय एवं धन खर्च करना पड़े तो उसमें असमंजस करने की तनिक भी आवश्यकता नहीं है, जिस प्रकार कृषि करने के लिए, व्यापार करने के लिए आरम्भ में आवश्यक पूँजी खर्च करनी पड़ती है, तब लाभ उठाने का अवसर आता है, उसी प्रकार विचार निर्माण का कार्य भी किसी के कुछ कह देने मात्र से पूरा नहीं हो जाता, वरन् उसके लिए एक रचनात्मक मनोवैज्ञानिक भूमिका बनानी पड़ती है । आन्दोलनकारियों द्वारा बहुधा लम्बे जुलूस निकाले जाते हैं, उनसे पूछा जाय कि इतने मनुष्यों का इतना श्रम, समय और नोटिस–पोस्टर आदि का भारी खर्च क्यों उठाया जा रहा है ? तो वे बतावेंगे कि इस प्रदर्शन से जनता की भावनाऐं उत्तेजित करने का अवसर मिलता है । स्वतंत्रता आन्दोलन में सत्याग्रह, निषेधात्मक कानून तोड़ना आदि कितने ही काम ऐसे–ऐसे किए जाते थे जिन्हें निरुपयोगी कहा जाय तो कुछ अत्युक्ति न होगी । खारी मिट्टी को पानी में घोलकर उसे उबालने में जितने की लकड़ी जल जाती थी, उससे चौथाई कीमत का भी नमक नहीं बनता था । यह सब कानून तोड़ने की जन–भावनाऐं उत्तेजित करने के लिए थे, नमक का व्यापार नहीं ।

कौंग्रेस के वार्षिक अधिवेशनों में प्रायः ५० लाख खर्च होता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रहा है । धार्मिक मेले भी काफी खर्चीले होते हैं, प्रदर्शनियाँ लगाई जाती हैं, तो उनमें ढेरों धन तथा साधन खर्च होता है, गाँवों में सिनेमा दिखाकर सरकार प्रचार कार्य करती है । ऐसे प्रदर्शन कम मँहगे नहीं होते । दंगल, प्रतियोगिताऐं, सम्मेलनों में होने वाले खर्चों का हिसाब लगाया जाय तो इसमें समय और धन की बर्बादी सोची जा सकती है, पर वास्तविकता कुछ भिन्न ही है । सद्विचार निर्माण के लिए यदि संसार का सारा धन खर्च हो जाय या सारा समय लग जाय तो भी उसे कुछ घाटे की बात नहीं माननी चाहिए । यज्ञ–हवनों में थोड़ा पैसा खर्च होता है, उसके वैज्ञानिक लाभ हैं, पर यदि उन्हें न भी मानें और धर्म प्रयोजन के लिए एक जन–सम्मेलन ही मान लें तो भी उसमें खर्च किया जाने वाला धन ऐसे ही अन्य सभी माध्यमों से कम ही बैठेगा । जनता का पैसा नशेबाजी, मिथ्या प्रदर्शन और व्यर्थ आडम्बरों में कम बर्बाद नहीं होता, लोग उन बातों पर ध्यान नहीं देते । धार्मिक प्रयोजनों में होने वाला थोड़ा भी खर्च अखरता है । कारण एक ही है कि उनकी उपयोगिता समझी–समझाई नहीं जा सकी । यदि उन धर्म प्रयोजनों के माध्यम से जन–जागरण के, नव–निर्माण के प्रयोजन को सिद्ध किया जा सके, तो कोई भी विचारशील उस खर्च का स्वागत ही करेगा । बर्बादी कहने का तो कभी प्रश्न ही न उठेगा ।

उद्देश्य प्रधान रहे–विचार निर्माण धर्म प्रयोजन का उद्देश्य है । कर्मकाण्ड उसका कलेवर है । उसे इसी रूप में प्रयुक्त किया जाय तो फिर इस दिशा में किए जाने वाले सारे प्रयत्न सार्थक माने जायेंगे । आज तो निष्फल कलेवर निरुद्देश्य कर्मकाण्डों की ही धूम है । उसी से उनके सम्बन्ध में उँगली उठती है । जब जन–मानस की दिशा मोड़ने के लिए, भावनात्मक उत्कर्ष के लिए–नैतिकता, सदाचार, देश–भक्ति, कर्तव्य परायणता, विवेकशीलता जैसी सद्भावनाओं को विकसित करने कि लिए, धार्मिक कर्मकाण्डों का प्रयोग किया जाने लगेगा, तब उनका हर क्षेत्र में पूरा–पूरा स्वागत एवं समर्थन भी होने लगेगा ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आज कितने ही प्रकार के धर्मानुष्ठान होते रहते हैं । रामायण, सम्मेलन, गीता समारोह, भागवत कथा, सत्यनारायण कथा, यज्ञानुष्ठान, व्रत उद्यापन, पर्व त्यौहार, षोडश संस्कार तीर्थ स्नान समारोह, धार्मिक मेले, पद यात्रा, रामलीला, रासलीला आदि कितने ही प्रकार के धर्मोत्सव समय-समय पर नियोजित किए जाते रहते हैं, यदि इनकी हर क्रिया के साथ व्याख्या विवेचना एवं प्रेरणा भर दी जाय, तो नव-निर्माण की प्रेरणा जन-मानस में उत्पन्न करने का प्रयोजन सहज ही पूरा हो सकता है । जिस प्रकार का लोक शिक्षण आज अभीष्ट है, उसे इन धर्म प्रयोजन में बड़ी आसानी से 'फिट' किया जा सकता है । सच तो यह है कि दूरदर्शी ऋषियों ने मानव-जीवन की समग्र शिक्षा को, धर्म ग्रन्थों में लिखकर ही अपना कर्तव्य पूरा नहीं किया है, वरन् उन्हें सर्व साधारण की मनोभूमि में नाटकीय ढंग से प्रविष्ट कराने के लिए इस प्रकार के कर्मकाण्डों एवं समारोहों की भी परम्परा प्रचलित की थी ।

इन माध्यमों में एकत्रित किए गये लोगों की विचार गोष्ठी बहुत ही लाभकारी सिद्ध होती है । धार्मिक वातावरण में एकत्रित लोगों की मनोभूमि अपेक्षाकृत अधिक लचीली हो जाती है और उनमें आदर्शवादी आस्थाओं को सुनने, हृदयंगम करने तथा अपनाने का सन्तुलित 'मूड' रहता है । भावनात्मक नव-निर्माण के लिए इस प्रकार की जन उपस्थिति असाधारण रूप से सफल रहती है ।

टूटे-फूटे, लंगड़े-लूले, काने-कुबड़े ढंग से आज हमारे धर्मानष्ठान नियोजित किए जाते हैं । उनका वातावरण अश्रद्धापूर्ण एवं उपहासास्पद रहता है । कारण यह है कि अन्ध श्रद्धालु तथा फूहड़ लोगों के अविकसित मस्तिष्क उनका ताना-बाना बुनते हैं । यदि उनकी व्यवस्था एवं योजना सुलझे हुए व सुधरे हुए मस्तिष्क सोचें, कलात्मक एवं सुसंस्कृत ढंग से व्यवस्था बनायें तो निस्संदेह हमारा छोटे-से-छोटा धर्मोत्सव असाधारण रूप से आकर्षक, मनोहर, उल्लासपूर्ण, प्रेरणाप्रद बन जाय । अनुभव साक्षी है कि युग निर्माण योजना की शाखायें जहाँ जन्म दिवसोत्सव,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विवाह दिवसोत्सव थोड़े ढंग–ढाँचे के साथ मनाने लगी हैं, वहीं धार्मिक श्रद्धा एवं संगठन का आशाजनक वातावरण बना है । अन्यान्य आयोजन भी इसी प्रकार मनाये जाने लगें तो उनके फलस्वरूप लोक मानस में एक नवीन चेतना एवं स्फुरणा की दौड़ जाय । विचार क्रान्ति की पृष्ठभूमि बनाने में ये आयोजन कितने अधिक उपयोगी हैं, यह कहने से नहीं करते देखने से ही सम्बन्ध रखता है । हम अपने विगत ४० वर्ष के जीवन अनुभवों के आधार पर यह विश्वासपूर्वक कह सकते हैं कि राष्ट्र का भावनात्मक नव–निर्माण करने के लिए जितनी सफल यह प्रयोग प्रक्रिया हो सकती है, उतनी और कोई नहीं । लाखों मनुष्यों की जीवन दिशायें बदल देने और उन्हें कुछ से कुछ बना देने के जो व्यक्तिगत अनुभव हुए हैं, उसके आधार पर हम पूरे साहस और पूरे विश्वास के साथ यह कह सकते हैं कि यदि देश के प्रबुद्ध लोग इस क्षेत्र में उतर पड़ें, धर्मतन्त्र के माध्यम से जन–जागरण की सुसंगठित योजना बनावें तो वह चमत्कार उत्पन्न हो सकता है, जिसकी आज कोई कल्पना भी नहीं कर सकता ।

भावी नेतृत्व की भावना–अब जन नेतृत्व का उत्तरदायित्व राजनेताओं के हाथ से हट कर उस धर्मनीति के प्रबुद्ध कार्यकर्त्ताओं, युग–निर्माताओं के हाथ में जाने वाला है जो धर्मोपदेश ही नहीं करेंगे अपने जीवन क्रम में भी आदर्शवादिता का, धार्मिकता का समन्वय करेंगे । वह समय निकट है, जब धर्म का राजनीति पर नियन्त्रण होगा । धर्मनेता जब जनमानस तक पहुँच सकने में समर्थ होंगे तो राजनीति से दूर रहकर भी उसे कठपुतली की तरह नचा सकते हैं ।

धार्मिक दृष्टि से त्याग इसी का नाम है कि रोटी के अनिवार्य गुजारे की व्यवस्था करने के अतिरिक्त जन–जागरण की महानतम सेवा–साधना में लगा जाय, जो इस क्षेत्र में पूरा समय देकर उतरना चाहते हैं उन्हें पूर्ण विश्वास एवं पूर्ण निश्चिन्त हो जाना चाहिए कि उनको रोटी की समस्या बाधक नहीं मिलेगी । जो भारतीय समाज ८० लाख निठल्ले धर्म–ध्वजियों को गुलछर्रे उड़ाने के लिए प्रचुर धन दे सकता है, वह अपने सच्चे सेवकों को भूखा–नंगा नहीं रहने दे सकता ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जो पूरा समय नहीं लगा सकते वे अधूरा समय लगावें । आठ घण्टे सोने के, आठ घण्टे कमाने के, चार घण्टा इधर–उधर की मटरगश्ती में खर्च करने के बाद भी चार घण्टे बचते हैं । वे यदि धर्म तन्त्र के माध्यम से जन–जागरण के लिए खर्च करने की ठान लें, तो ऐसे कुछ ही व्यक्ति अपने क्षेत्र में चमत्कार उत्पन्न कर सकते हैं । अपने जैसे अनेक दूसरे बना सकते हैं और अनेक रचनात्मक हलचलों को जन्म दे सकते हैं ।

पीड़ित मानवता ऐसे ही प्रबुद्ध लोगों की, युग–निर्माताओं की, नर–रत्नों की आज गुहार मचाये हुए है, जो जन नेतृत्व की आवश्यकता पूर्ण करें, युग निर्माता की महत्वपूर्ण भूमिका पूरी करें । ऐसे व्यक्तियों में से सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति आप ही हैं । आप इन पंक्तियों को पढ़ें और ऐसा ही कुछ करने के लिए साहसपूर्ण कदम उठावें । आवश्यक मार्ग–दर्शन के लिए आप युग निर्माण योजना, मथुरा से आज ही सम्पर्क बना सकते हैं ।

पारमार्थिक महत्वाकांक्षा जागे–व्यक्ति स्वभावतः महत्वाकांक्षी है । जीव की इच्छा ऊँचे उठते–उठते सर्वोच्च पद पर पहुँचने की है । इसकी पूर्ति के लिए वह विविध प्रकार की गति–विधियाँ अपनाता है । धन उपार्जन से लेकर इन्द्रिय भोगों के तृप्त करने, सम्पन्नता का अहंकार दिखाने से लेकर सस्ती नामवरी लूटने तक के अनेक प्रयोग वह करता है । इन प्रयोगों में सबसे श्रेष्ठ प्रयोग यह है कि व्यक्ति समाज कल्याण के कार्यों में निरत रह कर अपनी ईश्वर प्रदत्त प्रतिभा को जनता जनार्दन के उत्कर्ष के लिए समर्पित कर दे । ईश्वर को आत्मसमर्पण करने का एक मात्र तरीका यही है कि उसकी प्रजा, उसकी दुनियों को अधिक सुखी और समुन्न बनाने में अपना बढ़–चढ़कर योगदान प्रस्तुत करे । इस त्याग भावना और सेवा बुद्धि से ही ईश्वर अपने भक्त की सचाई और झुठाई परखता है । झूँठे भक्त वे हैं, जो माला तो बहुत भारी फेरते हैं, पर विश्व मानव की सेवा का अवसर सामने प्रस्तुत रहने पर भी पत्थर की तरह निष्ठुर और कठोर बने बैठे रहते हैं । ऐसे लोगों की यह आशा–दुराशा मात्र ही सिद्ध होगी कि ईश्वर किसी के नाम रटने या

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्तुति खुशामद करने से प्रसन्न हो जाता है । भगवान भावना की उत्कृष्टता को ही प्यार करता है और सर्वोत्तम सद्भावना का एक मात्र प्रमाण जन–कल्याण के कार्यों में बढ़–चढ़कर योगदान करना ही है । धर्म की सेवा नीति और सदाचार की अभिवृद्धि में तत्परता एक ऐसी तपश्चर्या है जिससे प्रभावित हुए बिना ईश्वर रह ही नहीं सकता ।

किसी व्यक्ति का सम्मान इससे बढ़कर और कुछ हो ही नहीं सकता कि उसने अपना जीवन निःस्वार्थ भाव से लोक–कल्याण के लिए समर्पित कर दिया । ऐसे दिव्य जीवन स्वयं धन्य बनते हैं और दूसरे असंख्यकों को प्रेरण भरा प्रकाश प्रदान करते हैं । धन कमाने, इन्द्रिय भोगों में निमग्न रहने और वयस्क हो जाने पर भी परिवार के मोह में लुटते–पिसते रहने की मूर्खता में अधिकांश सुयोग्य व्यक्तियों के जीवन बर्बाद होते रहते हैं । क्या ही अच्छा होता कि उनने इन बाल–क्रीड़ाओं में अपने को लुटाया–खपाया न होता और वह काम करते जिससे उनका मानव जीवन सार्थक बनता । कितने ही व्यक्ति ऐसे होते हैं जिनके पास पर्याप्त समय, सुविधा एवं साधन हैं, फिर भी उन अभागों को उदारता और महानता मिली नहीं होती–अतः स्वार्थपरता के संकीण दायरे में ही जिन्दगी के बहुमूल्य क्षण समाप्त कर देते हैं । उनके कोई पदचिन्ह, कोई कर्तृत्व ऐसे नहीं रहते जिससे उनका सम्मानपूर्वक स्मरण किया जा सके ।

प्रार्थना और चेष्टा हर प्रबुद्ध व्यक्ति को यही करनी चाहिए कि उसे संकीर्ण–स्वार्थपरता से मुक्ति मिले । यही मुक्ति, जीवन–मुक्ति का साक्षात् स्वरूप है । इस स्थिति को प्राप्त कर लेना ईश्वर को प्राप्त कर लेने के ही समान है । समय और धन का उपयोग जिसने ठीक प्रकार करना जान लिया, वस्तुतः वही सच्चा बुद्धिमान है । हमें मूर्खता छोड़कर बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में प्रवेश करना चाहिए और जितनी भी सामर्थ्य पारिवारिक गुजर करने के उपरान्त बचती हो उसे परमार्थ कार्यों में लगाने की चेष्टा करनी चाहिए । कहना न होगा कि तीर्थयात्रा, ब्रह्मभोज, स्नान–दर्शन जैसे कर्मकाण्डों को परमार्थ नहीं कहा जा सकता । आज की परिस्थितियों में परमार्थ का सर्वोत्तम स्वरूप एक ही है कि भावना और विवेक की दृष्टि से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दरिद्र बने हुए मानव–समाज की आन्तरिक चेतना को जगाने के लिए प्रयत्न किया जाय । जगा हुआ मनुष्य प्रत्यक्ष देवता है । इस संसार में नर–पशुओं को इन्सान बनाने–भगवान बनाने के लिए यदि कुछ किया जा सकता हो तो उसे ही सच्चे अर्थों में परमार्थ कहा जायगा ।

धर्म मंच के माध्यम से जन–जागरण के लिए आज इतनी अधिक आवश्यकता है कि उसकी पूर्ति के लिए हजारों–लाखों जीवनों का उत्सर्ग होने की तात्कालिक आवश्यकता है । इसकी पूर्ति के लिए हमें आगे बढ़ना ही चाहिए, जीवन को सच्चे अर्थों में सार्थक बनाने वाली इस श्रेय साधना की ओर अविलम्ब कदम बढ़ाना ही चाहिए ।

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org